वी०सी०डी० 783 धुरी(पंजाब)

मु० 02.02.68 व्याख्या ता० 15.10.07

असली राजयोग की पढाई सिर्फ़ गृहस्थियों के लिए

ओम् शांति! जम्मू में वाणी चल रही थी। 2 फरवरी 1968 का दूसरा पेज। मध्यान्त में बात चल रही थी। मनुष्य परमात्मा का नाम-रूप-देश-काल पूछते हैं, नाम क्या है? क्रिश्चियन लोग अपने तरीके से बताते हैं। हिन्दू लोग अलग-अलग तरीके से बताते हैं। सिक्ख लोग अलग-अलग तरीके से बताते हैं। ये नाम है, ये रूप है, ये धाम है, ये उनका देश है, ये काल है। जैसे सिक्खों से पूछा जाये कि सद्गुरु भगवान का क्या आदेश है, कौन-सा काल है? तो कौन-सा काल बतावेंगे? आज से लगभग 5 सौ साल पहले गुरु नानकजी आए और उन्हों के द्वारा अकाल मूर्त का पार्ट चला। ऐसे-2, अपने-अपने तरीके से बताते हैं; लेकिन वास्तव में अलग-अलग रूप तो हो नहीं सकते। भगवान एक है तो भगवान का मुकर्रर रूप भी एक ही होगा, एक ही देश होगा, एक ही काल होगा। मूल रूप में एक होगा और सामान्य रूप से अलग हो सकता है सामान्य सृष्टि के कल्याण के लिए। तो मूल रूप में तो हमें बेसिक नॉलेज में पढ़ने को मिला, सुनने को मिला कि नाम क्या है? (किसी ने कहा- शिव) भगवान है तो सारी सृष्टि का कल्याण करेगा या एक, दो, चार का करेगा? करोड़/दो करोड़ का करेगा? जैसे बौद्धि लोग महात्मा बुद्ध को भगवान मानते हैं; (लेकिन) बौद्ध धर्म के फॉलोवर्स तो दुनियाँ में ज़्यादा नहीं हैं। क्राइस्ट के फॉलोवर्स फिर भी सौ/दो सौ करोड़ हैं। तो क्या सौ/दो सौ का ही कल्याण करेगा? भगवान होगा तो सारी सृष्टि का कल्याण करेगा या थोड़ों का कल्याण करेगा? सारी सृष्टि का कल्याण करेगा। इसलिए उसका नाम भी वैसा ही है 'शिव'। नाम है शिव; क्योंकि सारी सृष्टि का कल्याण करता है। शिव मतलब ही कल्याणकारी और रूप क्या है? उसका रूप वो है जो हम आत्माओं का रूप है। हम आत्माओं का रूप है ज्योर्तिबिन्दु। बिन्दी लगाते हैं ना। टीका लगाते हैं। किसकी यादगार में बिन्दी लगाते हैं? ये टीका यहाँ क्यों लगाते हैं; आत्मा यहाँ टिकी हुई है, उसकी यादगार में टीका लगाते हैं। आत्मा का रूप शास्त्रों में भी बताया है- "अणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः" (गीता 8/9) आत्मा अणु रूप है, अति सूक्ष्म है। तो जैसे आत्माओं का रूप है, आत्माओं के बाप परमात्मा का भी रूप है। ये बेसिकली बातें तो बताईं; लेकिन जब कार्य की बात आती है कि नाम क्या है, रूप क्या है और क्या करता है, तो सब गड़बड़ा जाते हैं। क्या करके जाता है। तो वह भी बताया। वह इस सृष्टि पर आकर वो काम करता है जो दुनियाँ में किसी ने नहीं किया है। न वो काम इब्राहिम ने किया है, न बुद्ध ने किया, न क्राइस्ट ने किया, न गुरुनानक ने किया, न विवेकानन्द ने किया। जो काम भगवान आकर करता है, वो किसी ने नहीं किया। क्या काम नहीं किया? पुरानी दुनियाँ को नई दुनियाँ बनाकर जाना ये एक भगवान का ही काम है। किसी भी धर्मपिता ने ये काम नहीं किया। वह भगवान धर्मपिता तो है; लेकिन ऐसे धर्म की स्थापना करके जाता है जो सारी सृष्टि के जितने भी धर्म हैं, उन सबमें (कई गुणा) ज़्यादा सुख देने वाला है। कौन-सा धर्म है? देवता धर्म। देवताओं से ज़्यादा सुख भोगने वाला तो दुनियाँ में और कोई

प्राणी होता ही नहीं। देवताएँ सबसे ज़्यादा सुख भोगते हैं। तो बोला कि नाम, रूप, देश, काल और कार्य ये सब बेसिक नॉलेज में तो बताए; लेकिन जो एडवांस नॉलेज/विशेष नालेज भगवान आकर देता है, उसमें ये भी बताता है कि नाम शिव है वह तो एक सामान्य बात हो गई कि कल्याणकारी है। अब कल्याणकारी तो नंबरवार सभी आत्माएँ हो सकती हैं। परसेन्टेज में तो सभी एक/दूसरे का कल्याण (करते ही हैं)। अपने बच्चों का कल्याण कौन नहीं करता है। टीचर अपने स्टूडेण्ट्स का कल्याण करता है कि नहीं? करता है। तो कल्याणकारी होना ये एक साधारण बात; लेकिन भगवान जो कल्याण करता है वो सारी सृष्टि के मनुष्य मात्र का और सभी आत्मा मात्र का कल्याण करके जाता है। कीट, पशु, पक्षी, पतंगें इनकी आत्माओं का भी कल्याण हो जाता है। इतना ही नहीं, सिर्फ चैतन्य आत्माओं का ही कल्याण नहीं करता है, इस सृष्टि के जो भी पाँच तत्व हैं- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश इनका भी कल्याण करके जाता है। ये पृथ्वी है, पृथ्वी का अर्थ ही है जो विस्तार को पाती है। पहले पृथ्वी छोटी थी तो नई दुनियाँ थी। वो नई दुनियाँ भगवान ने आकर बनाई। बाद में जैसे-2 जनसंख्या बढ़ती गई, दूसरे-2 धर्म वाली आत्माएँ आती गईं, पृथ्वी का विस्तार होता गया। भगवान हर समय कार्य नहीं करता है। कार्यकाल ये ऐसे ही नहीं कि हर युग में आता है- "सम्भवामि युगे-युगे" (गीता 4/8) या कोई खास युग में आता है- सतयुग में आया हो, त्रेता में आया हो, द्वापर में या कलियुग में। नहीं, कब आता है? जब सारी सृष्टि का पतन हो जाता है। जैसे दुनियाँ की हर चीज़ चार अवस्थाओं से पसार होती है, वैसे ये सृष्टि भी चार अवस्थाओं से पसार होती है- सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो। जब सारी सृष्टि कलियुग के अंत में तमोप्रधान बन जाती है, तब (परमपिता) परमात्मा बाप आते हैं और आकर के त्रिदेव की प्रत्यक्षता पहले करते हैं। 33 करोड़ देवताएँ हैं; लेकिन 33 करोड़ देवताओं में भी कोई विशेष पार्ट बजाने वाली आत्माएँ (भी) तो होंगी? वे कौन हैं? ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। ब्रह्मा के भी चार/पाँच मुख दिखाए जाते हैं। चार/पाँच मुख जो दिखाए जाते हैं, इससे साबित होता है कि भगवान चार/पाँच विशेष आत्माओं के द्वारा काम पूरा करता है। उन चार/पाँच आत्माओं में तीन (देवताएँ खास) दिखाए जाते हैं- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। हम आत्माएँ (भी) उसके बच्चे हैं और वह सुप्रीम सोल हमारा बाप है; लेकिन अंतर ये है कि हम जन्म-मरण के चक्र में आते हैं और वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। अगर वह भी जन्म-मरण के चक्र में आ जाए तो हमको छुड़ाने वाला कोई नहीं। इसलिए उसका एक ऐसा पार्ट बना हुआ है कि वह इस सृष्टि पर आता तो है-जैसे शास्त्रों में लिखा है- कल्प-2 लगि प्रभु अवतारा। सम्भवामि युगे-युगे॥ (गीता 4/8) उन्होंने तो झूठी बात भी लिख दी, सच्ची बात भी लिख दी। रामायण में कहा है- एक कल्प के बाद आता हूँ, कल्प-कल्प लगि प्रभु अवतारा-लेकिन फिर उन्होंने कह दिया त्रेतायुग में आता हूँ। गीता में लिख दिया- "सम्भवामि युगे-युगे" मैं हर युग में आता हूँ। अब हर युग में आएगा तो सतोप्रधान सृष्टि में आने की क्या दरकार। मकान जब पुराना होता है तभी (कोई बाप) उसको नया बनाता है। तो परमात्मा बाप कलियुग के अंत में आता है और आकर के सारी सृष्टि की मनुष्य मात्र की आत्माओं का उद्धार करके जाता है। कहाँ ले जाता है? परमधाम, जो उसका घर है। कोई कहे कि इसका क्या प्रूफ है कि परमधाम अलग से कोई धाम है जहाँ से आत्माएँ आती हैं? तो प्रूफ ये है कि दुनियाँ की आबादी हमेशा बढ़ती रही है या घटती रही है? आबादी हमेशा बढ़ी

है। कभी कम नहीं होती। इसका मतलब अगर इसी दुनियाँ की आत्माएँ होती तो पहले भी आबादी बढ़ जाती। इससे साबित होता है कि कहीं से आत्माएँ लगातार जन्म-मरण के चक्र में आ रही हैं; लेकिन उनको वापस जाने का कोई रास्ता नहीं मिलता। तो जो आत्माएँ लगातार आ रही हैं उससे ये साबित हो जाता है कि सृष्टि की जनसंख्या इसीलिए बढ़ रही है और वो बढ़ती हुई जनसख्यां ही बताती है कि कोई ऐसा भी धाम है जहाँ से आत्माएँ आती हैं। पाँच तत्वों के शरीर तो यहीं तैयार होते हैं; क्योंकि ये (मूल) पाँच तत्वों की दुनियाँ है; लेकिन एक ऐसी भी दुनियाँ है, जो आत्मलोक कही जाती है। क्रिश्चियन लोग उसको कहते हैं- 'सोल वर्ल्ड'। मुसलमान उसको कहते हैं- 'अर्श'। खुदा अर्श में रहता है, फर्श में नहीं रहता। तो उसे अर्श कहो, परमधाम कहो, ब्रह्मलोक कहो, सुप्रीम एबोर्ड कहो वह सूरज, चाँद, सितारों की दुनियाँ से पार है, जहाँ से वह आता है और आकर इसी सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो हीरो-हीरोईन के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं उनमें प्रवेश करता है। ये सृष्टि क्या है? एक प्रकार का रंगमंच है, नाटकशाला है। इस नाटकशाला में कुछ विशेष आत्माएँ, मुख्य पार्टधारी भी तो होंगी। तो जो मुख्य पार्टधारी आत्माएँ हैं राम-कृष्ण और उनकी सहयोगी शक्तियाँ। राम की सहयोगी शक्ति सीता और कृष्ण की सहयोगी शक्ति राधा। इन चार विशेष आत्माओं के द्वारा (परमपिता) परमात्मा आकर साकार रूप में प्रत्यक्ष होता है। उसको अपना शरीर नहीं है। हमको अपना शरीर होता है। हम गर्भ से जन्म लेते हैं और वह गर्भ से जन्म नहीं लेता। क्यों नहीं लेता; वह सदैव स्वस्थिति में रहने वाला है और हम (भोगी) आत्माएँ सदैव स्वस्थिति में रहने वाली नहीं हैं। इसलिए जो सदैव स्वस्थिति में रहने वाला है वह सदैव शांत रहेगा। कभी दुखी होने का सवाल ही नहीं। इसलिए वह सुख का सागर है, शांति का सागर है। इसलिए वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। हम आत्माओं (को) अपने स्वरूप का परिचय मालूम पड़ गया कि हम आत्मा ज्योतिबिन्दु हैं, फिर भी हम उस स्वरूप में सदाकाल टिक नहीं पाते। इसलिए हमारा सुख और शांति का माद्दा नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार हो जाता है। सुख-शांति का माद्दा नंबरवार हो जाता है, इसलिए हमको जन्म-मरण के चक्कर में आना पड़ता है। वह परमपिता, जो सुप्रीम सोल है सदैव निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी है। वह कलियुग के अंत में आकर के हम आत्माओं को भी निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी बनाता है। निराकारी का मतलब सदैव हमारी ये स्मृति रहे कि हम ज्योतिबिन्दु आत्मा (अतिसूक्ष्म) हैं। देह और देह के संबंधी हमको याद ही न आएँ। याद तो आते हैं। अपनी देह तो बहुत याद आती है। देह याद आती है, देह के पदार्थ याद आते हैं। यह चीज़ हमारे पास होना चाहिए, वह चीज़ हमारे पास होना चाहिए। मकान होना चाहिए, गाड़ी होनी चाहिए। तो ये जो पदार्थ भी याद आते हैं साथ-2, ये शरीर के पदार्थ हैं। आत्मा के पदार्थ, आत्मा का पदार्थ तो ये शरीर ही है; लेकिन हम आत्माओं को ये शरीर के पदार्थ भोगने होते हैं। परमपिता इनको नहीं भोगता है। न शरीर का भोग भोगता है और न शरीर के पदार्थों का भोग भोगता है। इसलिए वह जन्म-मरण के चक्कर में (ही) नहीं आता है। हम जन्म-मरण के चक्कर में क्यों आते हैं; हम आत्माएँ देह और देह के संबंध, देह के पदार्थ भोगने के जन्म-जन्मान्तर के आदी हैं। देवता थे तो भी शरीर का सुख भोगते थे। दुनियाँ के जो भी पदार्थ हैं उनका सुख भोगते थे और जब द्वापर, कलियुग हुआ तो भी भोगते थे। अंतर क्या हुआ? सतयुग-त्रेता में हम जो सुख भोगते थे वो आत्मिक स्थिति में रहकर के भोगते थे। आत्मा की स्मृति रहती

थी। इसलिए देह और देह के पदार्थों का और देह के संबंधों का लेप-क्षेप नहीं लगता था, लेप-क्षेप हमको चिपकता नहीं था और यहाँ क्या होता है द्वापर युग से, आत्मा की शक्ति क्षीण हो गई, आत्मा आठ कला की रह गई तो हमको देह का सुख खींचने लगा। देह के पदार्थ हमको आकर्षित करने लगे। देह के संबंध हमको अपनी तरफ खींचने लगे। बार-2 वो (गुप्तांग) स्मृति में आने लगा। यहीं से दुख शुरू हो गया। दुख का मूल कारण क्या हुआ? स्व की विस्मृति होती गई और जो देह है, जो अपनी चीज़ नहीं है, आज हमें देह दिखाई पड़ रही है और कल ये देह खलास हो जाएगी, तो देह, देह के पदार्थ, देह के संबंध वो याद आने लगे। तो जो असली स्मृति है उससे हम विस्मृत हो गए। असली स्मृति क्या है? आत्मा की याद। वो आत्मा की याद से हम महरूम होते गए, होते गए, होते गए, आज सारी दुनियाँ भौतिक बन गई। सब मनुष्य मात्र किसके पीछे पड़े हुए हैं? भूत। पाँच तत्वों से बने हुए पदार्थों के पीछे पड़े हुए हैं। बुद्धि 24 घण्टे कहाँ लगी रहती है? देह के संबंधों में लगी रहती है। देह की परवरिश में लगी रहती है। देह के पदार्थों को इकट्ठा करने में लगी रहती है। तो इन चीज़ों की याद का ये जो लगाव पैदा हो जाता है, यही फिर हमको जन्म-मरण के चक्र में लाता है और ऐसे चक्र में लाता है जिससे हमको दुःख मिलता है, सुख नहीं मिलता है। अभी भौतिकवाद बढ़ता जा रहा है कि कम हो रहा है? भौतिकवाद मतलब भौतिक चीज़ें। पाँच तत्वों से बनी हुई वस्तुएँ हमको इतना आकर्षित करती जा रहीं हैं और आत्मा की विस्मृति होती जा रही है। तो परमात्मा बाप आकर के मुख्य बात यही सिखाता है कि अपने को आत्मा समझो। दूसरे को भी देखो तो आत्मिक रूप में भृकुटी के मध्य में चमकता हुआ सितारा देखने की प्रैक्टिस करो। प्रैक्टिस पक्की हो जाएगी तो वो सितारा ही याद पड़ेगा। फिर ये देह याद नहीं पड़ेगी। देह जब याद नहीं पड़ेगी तो देह का आकर्षण भी आकर्षित नहीं करेगा। जब देह का आकर्षण नहीं होगा, आत्मा की ही स्मृति रहेगी तो उसका रिज़ल्ट ये होगा कि हम स्वस्थिति में रहने के कारण स्वर्ग का अनुभव करेंगे। इस दुनियाँ में भी स्वर्ग का अनुभव कर सकती हैं आत्माएँ। अगर अनुभव नहीं कर सकतीं तो मुसलमानों की कुरान में ऐसे (क्यों) लिखा हुआ है कि जब दुनियाँ का विनाश होगा/कयामत होगी तो भगवान के बंदे बड़े मौज में रहेंगे? दुनियाँ का विनाश होना है तो दुनियाँ दुखी होनी चाहिए। भगवान के बंदे क्यों मौज में रहेंगे? कोई कारण होगा? हाँ, भगवान ने उनको पहले से ही गुप्त रूप में ये पाठ पढ़ाया कि तुम ये पढ़ाई पढ़ो। क्या पढ़ाई पढ़ो? कि तुम देह नहीं हो, तुम ज्योतिबिन्दु आत्मा हो। ये पढ़ाने के साथ-साथ फिर ये भी बताया कि आत्मा कैसे इस सृष्टि पर आती है। कैसे सुख भोगती है। क्या कारण होता है जो सुख भोगती है और क्या कारण होता है जो दुख भोगती है। दुनियाँ में हर चीज़ की चार अवस्थाएँ होती हैं। दो अवस्थाओं में सुख और दो अवस्थाओं में दुख। इस सृष्टि में भी चार आयाम हैं- सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। जैसे कोई ड्रामा होता है/कोई नाटक होता है, तो उसमें तीन/चार सीन होते हैं ना। तो ऐसे ही यह रंगमंच है। इस मनुष्य सृष्टि के रंगमंच में चार सीनों से मनुष्य आत्माओं को गुज़रना पड़ता है। जो श्रेष्ठ आत्माएँ होती हैं वे सतयुग से ही आकर के जन्म लेती हैं। सारी सृष्टि (में) ऑलराउण्ड पार्ट बजाती हैं और जितनी ही कमज़ोर आत्माएँ होंगी, जिन्होंने आत्मिक स्मृति का अभ्यास कम किया होगा वे पूरा चक्कर नहीं लगाती हैं। कम अभ्यास किया है, तो कम चक्कर लगावेंगी, कम जन्म पावेंगी, कम सुख भोगेंगी और पूरा चक्कर लगाया है तो ज़रूर उन्होंने

आत्मिक स्मृति का ज़्यादा अनुभव किया है। आत्मिक स्मृति का ज़्यादा अनुभव करने से, ज़्यादा प्रैक्टिस करने से हम जन्म-जन्मान्तर सुखी रहते हैं। अब जाकर के ये बात क्लीयर हुई कि इसके लिए हमें ज़्यादा ज़रूरी है अपनी आत्मिक स्मृति को याद करते हुए आत्माओं के बाप परमपिता को याद रखना। शरीर का वर्सा शरीर के बाप से मिलता है। वो एक जन्म के लिए मिलेगा। एक जन्म के लिए ये शरीर है, एक जन्म का वर्सा मिलता है; लेकिन जो आत्माओं का बाप है वह एक जन्म का वर्सा नहीं देता है। 21 जन्मों का तो पक्का-2 वर्सा देता है सतयुग-त्रेता दो युगों का और साथ-2 ये भी पक्का है कि अगर 21 जन्मों का वर्सा पक्का-2 ले लिया तो द्वापर और कलियुग में भी हम ज़्यादा से ज़्यादा सुख भोगेंगे। भगवान तो आकर के पक्का ही वर्सा देता है; लेकिन द्वापर और कलियुग में जो कच्चा वर्सा मिलता है, कच्चे का मतलब दुख भी होता है, तो सुख भी होता है; लेकिन द्वापर-कलियुगी दुनियाँ में जो हम सुख भोगते हैं वह भी अभी की प्रारब्ध है। जिसने आत्मिक स्मृति का जितना पक्का अभ्यास कर लिया वह वहाँ बचा हुआ रहता है। अभी जो तीव्र पुरुषार्थी होगा वो तीव्र पुरुषार्थ के संस्कार द्वापर-कलियुग में भी चलते रहेंगे। इसका प्रूफ क्या है? इसका प्रूफ ये है, जैसे महारानी विक्टोरिया का वज़ीर था। सड़कों पर बैठकर के स्ट्रीट लाइट में उसने पढ़ाई पढ़ी जिन्दगी में। वह अपने पूर्व जन्मों का कोई प्रालब्ध लाया क्या? पूर्व जन्म की कोई कमाई करके लाया? नहीं लाया। एकदम नीची स्टेज में स्ट्रीट लाइट में कौन पढ़ेगा ? जैसे झोपड़ी में रहने वाले लोग होते हैं उनके पास कुछ नहीं होता है, तो उनके बच्चे स्ट्रीट लाइट में पढ़ेंगे। तो ऐसी प्रारब्ध लाने वाला भी पढ़-लिखकर के क्या बन गया? विक्टोरिया का वज़ीर बन गया! विक्टोरिया है महारानी और महारानी को चलाने वाला ऐसे करो, ऐसे करो, ऐसे करो, ऐसे करो। कितना ऊँचा पद बन गया! कैसे बन गया? ये पढ़ाई उसने कहाँ पढ़ी? इस जन्म में पढ़ ली? तो फिर सभी ऐसे ही पढ़ाई पढ़ लें। नहीं, उसने ये जो पढ़ाई पढ़ी है भगवान बाप से (उसका) कोई टाइम है। कलियुग के अंत में जब भगवान बाप इस संगमयुग में आते हैं, तब (उसने) आकर के ये पढ़ाई पढ़ी। ये पढ़ाई विक्टोरिया का वज़ीर भी पढ़ेगा, जब क्रिश्चियंसन निकलेंगे। जो अंतिम मुख्य चार धर्म हैं- देवता, इस्लाम, बौद्ध और क्रिश्चियन। उनमें जो चौथे धर्म का धर्मपिता है वह जब आता है, तो फिर उसके फॉलोवर्स भी निकलते हैं। वे भी ईश्वर को पहचानते हैं; लेकिन लास्ट में पहचानेंगे। जो पहले-2 पहचानने वाली आत्माएँ हैं वे देव आत्माएँ हैं और वे देव आत्माएँ शुरू से भगवान बाप को पहचानती हैं, इसलिए वे लंबे समय का सुख भोगने का अभ्यास अभी कर लेती हैं। ये अभ्यास सब नहीं करेंगी। कौन करेंगे ? बाप के दस बच्चे होते हैं। दस बच्चों में बाप के रहते-रहते सबसे जास्ती प्राप्ति कौन-सा बच्चा करेगा? दसवाँ बच्चा करेगा या पहला बच्चा करेगा? पहला बच्चा जास्ती प्राप्ति करेगा; क्योंकि बड़ा बच्चा है। परम्परा में भी देखा जाये तो कोई भी धर्म की परम्परा हो, उसमें बड़े बच्चे को राजा बनाया जाता है। बड़े बच्चे को राजा क्यों बनाया गया; क्योंकि भगवान बाप भी जब इस सृष्टि पर आते हैं तो जो बच्चे पहले-2 अपनी आत्मिक स्मृति को पहचानते हैं, अपनी आत्मा के अनेक जन्मों को जान लेते हैं, अपनी आत्मा (की) जीवन कहानी को जान लेते हैं, 84 के चक्र को जान लेते हैं, वे बच्चे भगवान से ज़्यादा प्राप्ति करते हैं। तो यहीं से फाउण्डेशन पड़ गया। ये फाउण्डेशन फिर जन्म -जन्मान्तर चलता रहता है। कोई भी राजा होगा वह अपने बड़े बच्चे को राजाई देगा। वह अगर शरीर छोड़ दे तो उससे छोटे बच्चे

को मिल जाएगी। ये राजाई का वर्सा कोई देता नहीं है। राजाई की पढ़ाई किसी (को) पढ़ते हुए किसी ने देखा? डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ेंगे, वकालत की पढ़ाई पढ़ेंगे, इंजीनियरिग की पढ़ाई पढ़ेंगे। स्कूल होंगे, कॉलेज होंगे; लेकिन हिस्ट्री में जो छोटे-बड़े राजाएँ हुए हैं, इन राजाओं को राजाई किसने दी? किसने पढ़ाई पढ़ायी? पढ़ायी होगी कि नहीं पढ़ायी होगी किसी ने? तो वह पढ़ाई अभी भगवान आकर के पढ़ाता है। कलियुग के अंत में जब सत्युग का आदि होने वाला होता है, तब भगवान बाप आते हैं और राजयोग सिखाते हैं। क्या राजयोग है? वह राजयोग है- मूलरूप में अपन को आत्मा समझो (और) भगवान बाप को पहचानो। कौन है भगवान बाप? ब्रह्माकुमारी तो कह देंगी, ज्योतिबिन्दु भगवान बाप है। अगर ज्योतिबिन्दु ही भगवान बाप है तो कुछ करके जाएगा क्या? ज्योतिबिन्दु सृष्टि को परिवर्तन कैसे करेगा? बिन्दी फुदक-फुदककर सारा काम कर लेगी क्या? शरीर चाहिए कि नहीं चाहिए? अगर शरीर चाहिए तो कौन-सा शरीर चाहिए? ब्रह्माकुमार तो यह कह देंगे, दादा लेखराज का शरीर चाहिए। अरे! ऐसे तो कितने आए और गए। जैसे- ब्रह्माबाबा आए, शरीर धारण किया, उनके द्वारा वाणी चली। आए और चले गए। सृष्टि का परिवर्तन हुआ क्या? दुनियाँ नई बन गई क्या? नर्क से स्वर्ग बना क्या? तो फिर भगवान कहाँ साबित हुआ? भगवान कब साबित होगा? भगवान का पार्ट तब साबित होगा, जब कुछ करके जाये। इसलिए दुनियाँ में ब्रह्मा की पूजा नहीं होती। है तो त्रिदेव में से एक देवता; लेकिन तीनों देवताओं की कोटि है- नीचे, मीडियम, सबसे ऊपर। सबसे नीचा देवता त्रिदेव में कौन? ब्रह्मा। उसकी पूजा नहीं होती, मंदिर नहीं बनते, मूर्तियाँ नहीं बनतीं। क्यों नहीं बनतीं; क्योंकि दुनियाँ सिद्धि को पूजती है। जो सिद्धि पा लेता है, सफलता पा लेता है, उसको दुनियाँ माने। जिसने सफलता नहीं पाई उसको दुनियाँ नहीं मानती। तो ब्रह्मा के द्वारा कार्य सम्पन्न नहीं हुआ। आता तो है, वाणी तो चलाता है; लेकिन जिसके द्वारा आया और वाणी चलाई, उसका नाम रखा गया- 'ब्रह्मा'। बह्मा मतलब 'बड़ी माँ'। जैसा काम किया, वैसा नाम पड़ा। दुनियाँ में जो माताएँ होती हैं वे भी बहुत सहन करती हैं। पुरुषों के मुकाबले और स्त्रियों के मुकाबले ज़्यादा सहन कौन करता है? बाप सहन करता है, टीचर सहन करता है, गुरु सहन करता है कि माता सहन करती है? ज़्यादा सहन तो माता करती है ना। माता में सहनशक्ति बहुत होती है। ब्रह्मा भी आए तो उन्होंने क्या किया होगा? सहन किया होगा, तो उनका नाम ब्रह्मा पड़ा। तो जो काम के आधार पर नाम पड़े हैं शास्त्रों में, कोई नाम ऐसा है जिसका अर्थ न हो? शास्त्रों में जितने भी नाम हैं वे अर्थ सहित हैं। 'दुर्योधन', जिसने दुष्टयुद्ध किया। 'दुःशासन', जिसने दुष्ट शासन किया। 'रावण', जिसने लोगों को रुलाया। 'नारद', नार मतलब जल, द मतलब देने वाला, जो दूसरों को ज्ञान जल देता रहता था; लेकिन खुद नरक की दुनियाँ में रहता था या स्वर्ग में चला गया? कहाँ चक्कर काटता रहता था? यहीं नर्क की दुनियाँ में ही चक्कर काटता था। स्वर्ग में पहुँच जाता तो नारायण नाम पड़ता; नारायण नाम नहीं पड़ा। सिर्फ ज्ञान देने का काम किया; लेकिन खुद धारण नहीं किया, तो स्वर्ग में नहीं गया। ईश्वर की नॉलेज, ईश्वर का ज्ञान जीवन में धारण करेंगे तो स्वर्ग में जाएँगे या सिर्फ दूसरों को देते रहेंगे? खुद धारण नहीं करेंगे तो स्वर्ग में चले जाएँगे? देवता कैसे बनेंगे? जीवन में खुद धारण करेंगे तो दूसरों को भी धारण करा सकेंगे। हम खुद ही धारण नहीं करेंगे तो हमसे जो सुनने वाले हैं वे भी धारण नहीं करेंगे। शास्त्रों में जितने भी नाम हैं जैसा-जैसा जिसने काम किया है, वैसे नाम पड़े हैं; लेकिन

शास्त्रों में जो कुछ लिखा हुआ है, कहाँ की यादगार है? इसी टाइम की यादगार है। अब वो चाहे रामायण लिखी गई हो, चाहे महाभारत हो, चाहे भागवत हो, गीता हो, चाहे कोई दूसरे शास्त्र हों ये सब यादगार कहाँ की है? इस समय, संगमयुग की। लोग समझते हैं कि रामायण का जो कार्यकाल है वो त्रेतायुग है। महाभारत का कार्यकाल है वो द्वापरयुग है और जो कंलकीधर अवतार में हुआ उनका कार्यकाल है कलियुग। हिरण्यकश्यप को मारने वाला नरसिंह अवतार उनका कार्यकाल है सतयुग; लेकिन ऐसा नहीं है। शास्त्रों में जितना भी, जो भी वर्णन आया है किसी भी भगवान के रूप में, किसी भी हीरो-हीरोईन के रूप में, चाहे शंकर का, चाहे राम का, चाहे कृष्ण का वो किस समय की यादगार है? इस समय संगमयुग में जो कार्य किया है वो ही शास्त्रों में अलग-2 तरीके से अलग-2 मनुष्यों ने लिख दिया है। तो अलग-2 मनुष्य जो शास्त्र लिखेंगे उसमें ज़्यादा सच्चाई होगी या (एक) भगवान आकर जो बताएँगे उसमें ज़्यादा सच्चाई होगी? भगवान आकर के उन शास्त्रों का सही अर्थ बताता है। हैं तो सब शास्त्र इसी समय के; लेकिन फिर वो किसी को समझ में क्यों नहीं आते; क्योंकि उन शास्त्रों का सही अर्थ भगवान के सिवाय और कोई बता ही नहीं सकता। अभी भगवान इस सृष्टि पर आया हुआ है। वे बता रहे हैं कि जैसे आत्माएँ होती हैं 84 जन्मों में उनका नाम, रूप, देश, काल बदलता जाता है, ऐसे ही मेरा भी नाम, रूप, देश, काल इस सृष्टि पर आने के बाद निश्चित होता है। जैसा-2 मैं कार्य करता हूँ, वैसा-2 मेरा नाम रखा हुआ है। भगवान का एक नाम है कि अनेक नाम हैं? (किसी ने कहा- भगवान के अनेक नाम रखे हुए हैं।) भगवान के अनेक नाम रखे हुए हैं। इसका मतलब वह अनेक प्रकार के पार्ट बजाकर के गया है। शंकर जी के अनेक नाम रखे हैं। विष्णु सहस्त्रनाम की चौपड़ी बना दी। तो जितने-2 काम किए हैं, उतने-2 नाम पड़े हैं। तो ये जानना ज़रूरी है कि हम आत्मा कौन और हमने इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर के कौन-सा विशेष पार्ट बजाया? भगवान आता है वह भी पार्ट बजाता है, फिर भगवान के साथ हमने कौन-से देवी-देवता का पार्ट बजाया, वो हमारी बुद्धि में बैठे और उसके आधार पर ये भी बैठे कि 84 जन्मों में हमने कौन-से विशेष-2 पार्ट बजाए, कैसे-2 जन्म लिए और कैसे-2 हमने कर्तव्य किए। द्वापरयुग-कलियुग की तो मनुष्यों की हिस्ट्री है; लेकिन उससे पहले की हिस्ट्री किसी के पास है ही नहीं। ढाई हज़ार साल की हिस्ट्री है, जबसे इस सृष्टि पर ये मनुष्य धर्मपिताएँ आए हैं। मनुष्य धर्मपिताओं के नाम तो हैं ना। उन्होंने जो धर्म स्थापन किए वो इस सृष्टि पर मौजूद तो हैं ना। इब्राहिम ने ढाई हज़ार साल पहले इस्लाम धर्म स्थापन किया, उनकी हिस्ट्री है और उनके बाद जो भी धर्मपिताएँ मनुष्य गुरु रूप में आए उन सबकी हिस्ट्री है। बुद्ध की है, क्राइस्ट की है, गुरु नानक की है, शंकराचार्य की है, मोहम्मद की है; लेकिन हमारा देवी-देवता सनातन धर्म हिन्दुस्तान में किसने स्थापन किया वो किसी को पता ही नहीं। पता कैसे होगा, वह तो जन्म-मरण के चक्र में आता ही नहीं। हम जन्म-मरण के चक्र में आते गए, भूलते गए। सतयुग-त्रेता की हिस्ट्री ही किसी के पास नहीं (है)। जब त्रेतायुग पूरा होता है तो सृष्टि का आधा विनाश हो जाता है। तो वो हिस्ट्री किसी के पास हो ही नहीं सकती। जब तक भगवान इस सृष्टि पर न आए, तब तक इस सृष्टि की हिस्ट्री और जियोग्राफी की सच्ची नॉलेज कोई नहीं दे सकता। अभी भगवान बाप आया हुआ है, बताते हैं- लोग तुमसे पूछते हैं, भगवान का नाम, रूप, देश, काल बताओ। तुम आत्मा उनसे पूछो, तो वह भी मुँझ जावेंगे। वे हमसे पूछते हैं, यही बात हम उनसे पूछें, तो

कोई भी धर्म का आदमी हो मुँझेगा, सही नहीं बता पाएगा। किसको ये पता थोड़े ही है कि आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। न आत्मा का नाम, रूप, देश, काल किसी को पता है और न परमात्मा बाप का किसी को पता है। कौन बताता है? भगवान खुद ही आकर हम आत्माओं का परिचय देते हैं। इसलिए मनुष्यों ने जो गीता लिखी हुई है उसमें भी लिखा हुआ है- हे अर्जुन! तु अपने जन्मों को नहीं जानता, मैं तेरे को बताता हूँ। तो क्या एक अर्जुन को ही बताया या सब अर्जुन हैं? एक ने सौ परसेन्ट पुरुषार्थ किया तो सौ परसेन्ट (का) नाम चल गया अर्जुन; लेकिन पुरुषार्थ का अर्जन करने वाले तो सभी हैं। अर्जन मतलब कमाना। अपने पुरुषार्थ से अपने भाग्य को बनाने वाले तो हम सभी हैं ना। तो हम सभी अर्जुन हैं। आत्माओं से भी पूछा जाय कि तुम अपना जन्म-जन्मान्तर का नाम, रूप, देश काल बताओ, तो कोई नहीं बता सकेगा और परमात्मा का भी कोई नहीं बता सकता। तुम तो जानते हो कि आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। आत्मा में 84 जन्मों का इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। पहले बड़े-2 रिकॉर्ड होते थे, ग्रामों फोन बड़े-2 तवे जैसे और उसमें ढेर सारे गीत भरे हुए होते थे। जब शुरू-शुरूआत में चला तो एक रिकॉर्ड में एक ही गीत बजता था। फिर रिकॉर्ड छोटे होते गए, एक ही रिकॉर्ड में ढेर सारे गीत भरे होते। फिर टेपरिकॉडर चला, एक ही टेप में कितना भर जाता था। फिर उसके बाद वी०सी०डी० चली। वी०सी०डी० के बाद अभी डी०वी०डी० चली। अब उसके बाद छोटे-2 बने हुए यंत्र आते हैं, जिसमें सारा भर जाता है। (किसी ने कहा- आई०पोड,एम०पी०थ्री) हाँ, ऐसे ही छोटे-2 चले हैं ना वो डाल दो तो उसमें ढेर सारा मैटर भर जाता है। तो अब ये रिकॉर्ड छोटे होते जा रहे हैं। पहले बड़े-2 थे। ऐसे ही ये आत्मा एक ऐसा रिकॉर्ड है जिसमें 84 जन्मों का सारा पार्ट भरा हुआ है। ये सबसे वण्डरफुल रिकॉर्ड है। कोई कहे किसने बनाया। तो ये बनाया नहीं जाता है। वो रिकॉर्ड तो खलास भी हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं और ये आत्मा का रिकॉर्ड कभी नष्ट नहीं होता है। आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है। आत्मा भी अजर-अमर-अविनाशी है और परमात्मा बाप भी अजर-अमर-अविनाशी है, जिसका रूप बिन्दु (है)। आत्मा का भी रूप बिन्दु और परमात्मा का भी रूप बिन्दु। साँप का बच्चा, साँप का बाप दोनों की रूप-रेखा एक ही जैसी होगी ना। साँप लंबा तो साँप का बाप भी लंबा। हाथी मोटा-ताजा तो उसका बाप भी मोटा-ताजा। कीटाणु छोटा तो उसका बाप भी छोटा। तो ऐसे ही आत्मा भी ज्योतिबिन्दु, तो आत्मा का बाप भी ज्योतिबिन्दु; लेकिन अंतर ये है कि वह आत्माओं का बाप शिव इस सृष्टि पर आकर के सिर्फ एक जन्म लेता है। वह सिर्फ बाप के रूप में जब इस सृष्टि पर आता है, तो एक ही जन्म लेता है और हम आत्माएँ 84 के चक्र में आते रहते हैं और हर युग में आते हैं। वह सिर्फ संगमयुग में ही आता है, कलियुग के अंत में और सतयुग की आदि में। ये अंतर है। बाक़ी छोटी बिदी हम आत्मा भी हैं, परमात्मा भी है। उनमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। यहाँ भी बहुत हैं जो आत्मा-परमात्मा को बिल्कुल नहीं जानते। कहाँ? हमारे ब्राह्मण परिवार में भी ऐसे बहुत हैं। बूढ़ी-2 माताएँ कोई-2 तो ऐसी हैं कि उनसे पूछो तो कुछ बता नहीं सकेंगी। बस, बाबा, बाबा, बाबा, बाबा करती रहती हैं। बाबा की क्लास में आएँगी तो सो भी जाएँगी। जो सरेण्डर होकर के रहे माउण्ट आबू में, 70-70 साल की बुड्ढियाँ बैठी हुई हैं। कोई से पूछो आत्मा के बारे में, तो कोई नहीं बताएँगी। आत्मा बिन्दी को कैसे याद करें अभी भी उनकी ये समस्या है। उन्हें बिन्दी जैसे याद ही नहीं आती। बस, बाबा याद करेंगी। ब्रह्माबाबा याद आ जाएगा

उनको। तो यहाँ बहुत हैं, जो आत्मा-परमात्मा को बिल्कुल नहीं जानते और ऐसे भी हैं, जो आत्मा के बारे में बहुत कुछ जानते हैं और परमात्मा के बारे में भी बहुत कुछ जानते हैं। बहुत गहराई बता सकते हैं। ऐसे ही बाबा के पास बहुत आकर के पड़े हुए हैं, सरेण्डर भी हुए; लेकिन ज्ञान उनमें है ही नहीं। बस, खाते-पीते और सोते हैं। जैसे अवधूत होते हैं ना। अवधूत पड़े रहते हैं, मस्त कलंदर, ऐसे पड़े रहते हैं। कुछ भी समझते नहीं। बाकी विकार से छूट गए, बाबा के घर में आकर के बैठ गए, संन्यास धारण किया है ये भी एक कमाल की बात है। जो बाबा के घर में आकर के वहाँ बैठ गए, ये 68 की वाणी है ना। तो जो भी आकर के बैठ गए वे संन्यासी हुए या गृहस्थी हुए? वे सब संन्यासी हैं। वे सब संन्यास धर्म की आत्माएँ हैं। (किसी ने कुछ कहा- .....) मानेंगे कैसे नहीं। संन्यासी किसे कहा जाता है और गृहस्थी किसे कहा जाता है? (किसी ने कहा- जो घर में रहे) वे ब्रह्माकुमार-कुमारी क्या घर में नहीं रहते? वे ब्रह्माकुमारियाँ घर में रहती हैं ना। घर को गृहस्थी नहीं कहा जाता। 'ना गृहम् गृहम् इति उच्यते' मनुष्यों ने संस्कृत में ऐसे श्लोक बनाए हुए हैं। घर वाले को गृहस्थी नहीं कहा जाता। जो संन्यासी हैं वे भी घर बनाकर रहते हैं। गृहस्थ किसे कहा जाता है? 'गृहणी ग्रहम् उच्यते' जो घर में घरवाली होती है, घर संभालने वाली, बाप तो बाहर संभालेगा, बाहर की दुनियाँ में जाकर के कमाई करेगा और गृहस्थी में गृहणी क्या करती है? घर संभालती है। तो जिसके पास घर संभालने के लिए, बाल-बच्चे संभालने के लिए गृहणी हो, वह गृहस्थ कहा जाता है। तो ब्रह्माकुमारियों को गृहस्थ कहेंगे या संन्यासी कहेंगे ? संन्यासी कहेंगे। भगवान संन्यासियों को पढ़ाई पढ़ाने नहीं आता। जो भी बी०के० वाली बहनें सरेण्डर होकर के बैठी हुई हैं, वे अपन को क्या समझती हैं, हम गृहस्थी हैं कि संन्यासी हैं? (किसी ने कहा- गृहस्थी समझती हैं।) समझती हैं; लेकिन क्या गृहस्थी हैं? बाबा ने तो कहा घर-गृहस्थ में रहते हुए तुम विकारों के ऊपर जीत पाओ। तो वे घर-गृहस्थ में रहती हैं क्या? घर-गृहस्थ में तो नहीं रहती। घर-गृहस्थ में रहें और रहकर के विकारों पर जीत पाएँ, तब कहा जाए कि बड़ा काम किया। नहीं तो जैसे संन्यासी हैं, वे जंगल की दुनियाँ में रहते हैं। गृहस्थी से कोई मतलब ही नहीं। तो विकारों को जीतना क्या बड़ी बात है; लेकिन मैं तुम बच्चों को पढ़ाने आता हूँ मतलब गृहस्थियों को पढ़ाने आता हूँ। इसलिए एडवांस नॉलेज में जितने भी निकले, वे सरेण्डर वाले निकले या घर-गृहस्थ के निकले? (किसी ने कहा- ज़्यादा तो घर-गृहस्थ के निकले) सरेण्डर ब्रह्माकुमारियाँ कहाँ निकली? (किसी ने कहा- सरेण्डर तो निकली हैं) एक/दो निकली हैं तो उनके कोई पूर्व जन्म के संस्कार होंगे। पूर्व जन्म में भी वे संन्यासी बनकर के नहीं रही होंगी। गृहस्थी बनकर ही रही होंगी, ज्ञान लिया होगा और हम भी पूर्व जन्म में सरेण्डर होकर के नहीं रहे होंगे। हम लोगों ने भी यज्ञ के आदि में घर गृहस्थ में रहकर के ज्ञान लिया होगा। यहाँ नया तो कोई नहीं आता। जो पहले थे वे ही फिर दुबारा जन्म लेकर के आते हैं। एक मुरली में वाक्य आया हुआ है- धनवान बाप का बच्चा होगा तो गरीब के यहाँ गोद लेगा जाके? कोई अरबपति, करोड़पति का बच्चा है, झोपड़ी वाला कोई आदमी होगा वह उसके घर में गोद लेगा जाकर, वहाँ पलेगा जाकर? बिल्कुल नहीं पलेगा। ऐसे ही ब्रह्मा ने जिनकी परवरिश की है, सरेण्डर करके रखा हुआ है वो बहुत अलग बात हो गई। वे सब संन्यासी हैं। यज्ञ के आदि में हम बच्चे तो गृहस्थी थे और अभी भी गृहस्थी हैं, इसलिए हम गृहस्थियों को बाप आकर पढ़ाते हैं और बाप, बाप के रूप में आकर पढ़ाता है। माँ के रूप में पढ़ाई नहीं

पढ़ाता। माँ के रूप में बेसिक नॉलेज (देता है)। माँ होती है घर में (तो) वह प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पढ़ाएगी या बी०ए०,एम०ए० की पढ़ाई पढ़ाएगी? प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पढ़ाएगी। तो वो चीज़ अलग, जो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में चल रही हैं, वह जैसे दुनियाँ में साधु-संत, महात्माएँ होते हैं, संन्यासी होते हैं ऐसे उनकी दुनियाँ चल रही है। उनको पढ़ाई पढ़ाने के लिए भगवान नहीं आता है। बाप के रूप में तो बिल्कुल ही नहीं पढ़ाता। बाप के रूप में जब आकर के पढ़ाई पढ़ाता है तो सिर्फ गृहस्थियों को पढ़ाता है। इसलिए वहाँ दो तरह की आत्माएँ पल रही थीं। एक तो सरेण्डर होकर के जो अंदर पड़ी हुई थीं, वे सब संन्यासी हैं और दूसरे वे, जो बाहर से आते थे घण्टा, दो घण्टा पढ़ाई पढ़ी, सारा दिन अपने धंधे-धौरी में गए। एडवांस में सारे वो ही आ गए, जो घर-गृहस्थ में रहने वाले (थे)। उन्हीं घर-गृहस्थ वालों की बुद्धि में ये ज्ञान बैठता है। जो जन्म-जन्मान्तर संन्यास धर्म में रहे हैं, उनकी बुद्धि में ये ज्ञान बैठेगा ही नहीं। देखो, कितनी सहज बातें हैं। वही मुरली की बातें हैं जो सत्तर साल से (सुनते चले आए।) उनकी बुद्धि में क्यों नहीं बैठता। हमारी बुद्धि में क्यों बैठ रहा है; क्योंकि कल्प पहले भी भगवान ने हमको पढ़ाया था, घर-गृहस्थ में रहकर के। खुद भगवान आकर के बेहद की गृहस्थी बना। हम हद की गृहस्थी वालों को बेहद की गृहस्थी बनकर के भगवान ने आकर के पढ़ाया था। उनको नहीं पढ़ाया। अभी भी नहीं पढ़ रहे हैं। वे किसको फॉलो कर रहे हैं? ब्रह्मा को फॉलो कर रहे हैं ना। तो ब्रह्मा के जीवन में जो बात हुई, वो ही उनके जीवन में होगी। ब्रह्मा ने हार्ट फेल होकर के शरीर छोड़ दिया, तो जितने भी बड़े-2 ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं वो सब अचानक शरीर छोड़ते जा रहे हैं। तो इसमें कोई राज़ होगा ना। क्या राज़ होगा? राज़ यही है कि जो राज़ की बात हम गृहस्थियों को भगवान आकर के बताते हैं, वो राज़ वे संन्यासी लोग नहीं जानते और यही बात महाभारत में लिखी हुई है। इसी समय की यादगार है। भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य बड़े ज्ञानी थे ना। बड़े संन्यासी थे ना। गीता तो कौरवों के बीच में सुनाई गई और पाण्डवों के बीच में भी सुनाई गई; लेकिन फिर भी सारा ज्ञान समझने के बावजूद भी द्रोणाचार्य और भीष्म पितामह भगवान को पहचान नहीं सके और भगवान को सहयोग (भी) नहीं दे सके। किसको सहयोग दिया? कौरवों को सहयोग दिया, अंधे धृतराष्ट्र को सहयोग दिया। उनके भाग्य में ही नहीं है। इसलिए बोला कि मैं तुम गृहस्थी बच्चों को आकर के पढ़ाता हूँ; लेकिन संन्यासी लोग तुमको गिरी हस्ती समझते हैं। संन्यासी लोग गृहस्थी वालों को ऊँचा समझते हैं या नीचा समझते हैं? गृहस्थी भी जाकर उनके पाँव छूते हैं। कोई भी गृहस्थी होगा, कोई गुरु के सामने जाएगा तो क्या करेगा, पहले ही दण्डवत प्रणाम करेगा। माथा झुकाएगा ना और भगवान किसको ऊँचा समझता है? (संन्यासी) हमको नीचा समझते हैं और भगवान आकर के हमको ऊँचा समझता है कि यही मेरे देवताई बच्चे हैं। यही देवता बनते हैं। वे (सामान्य) संन्यासी तो दूसरे-2 धर्म में कनवर्ट होने वाले हैं। जो (अर्ध) देवता धर्म के थे, वे देवता धर्म के ही आकर के जब द्वापरयुग से नीचे गिरते हैं तो (हिन्दू से) दूसरे धर्मों में कनवर्ट हो जाते हैं। वे कनवर्ट होने वाले (सारे सामान्य) संन्यासी ही अभी आकर के बेसिक नॉलेज की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। जो (मनसा से) गृहस्थी हैं उनको आकर के मैं पढ़ाता हूँ। तुम 84 जन्म लेने वाले हो। 84 जन्मों के आदि में नारायण का राज्य था। नारायण संन्यासी था या गृहस्थी था ? (यादगार) मंदिर बने हुए हैं। क्या यादगार बनी हुई है? दोनों साथ-2 खड़े हुए हैं या एक खड़ा हुआ है? (किसी ने कहा- दोनों) दोनों हैं।

तो हम लक्ष्मी-नारायण के राज्य से अब तक गृहस्थ धर्म में जन्म लेते चले आ रहे हैं। संन्यासियों ने सारा डब्बा गोल किया है। द्वापरयुग से ये सब दूसरे धर्मों (के संग) में कनवर्ट होते गए। कनवर्ट होकर के भारत का नाम बाला किया या बदनाम किया? भारत का नाम (का फिर बन) बदनाम कर दिया। अभी भी भारत के संन्यासी विदेशों में जा रहे हैं और वहाँ जाकर के (झूठी) पढ़ाई पढ़ाते हैं, हम तुमको गीता की राजयोग की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। गीता के भगवान ने आकर के जो राजयोग की पढ़ाई पढ़ायी थी, वो (ही) राजयोग हम तुमको तुमको सिखा रहे हैं। जबकि राजयोग के बारे में उनको कुछ पता ही नहीं है। देह का योग (आसन-प्राणायाम) सिखाते हैं। दैहिक आसन सिखाएँगे, प्राणायाम सिखाएँगे। यही तो सिखाते हैं; लेकिन क्या ये असली राजयोग है? नहीं। असली राजयोग (वह) है जिससे आत्मा का उत्थान हो न कि सिर्फ देह का? आत्मा का उत्थान अभी भगवान आकर के करते हैं। आत्मा जैसे बीज है और ये शरीर जैसे वृक्ष है। बीज अगर पावरफुल होगा तो वृक्ष भी पावरफुल होगा। तो भगवान आकर के बीज को मज़बूत बनाते हैं। आत्मा रूपी बीज को मज़बूत कैसे बनाया जाए? आत्मिक स्मृति से। आत्मा की याद करो और उस बीज में अगर ज़्यादा से ज़्यादा ताकत भरनी है तो परमात्मा बाप को याद करो। तो बताया कि संन्यासियों का तो धर्म ही अलग है। हमारे धर्म से संन्यासियों का धर्म बिल्कुल अलग है। ये (ईश्वरीय) ज्ञान तुम्हारे लिए है। तुम्हारे किसे कहा जाता है? ये ज्ञान तुम्हारे लिए है। ये ज्ञान इनके लिए नहीं है। इनके लिए मतलब किनके लिए? ब्रह्मा और ब्रह्मा के फॉलोवर्स के लिए नहीं है। यह तो संन्यासियों के लिस्ट में जाने वाले हैं। वण्डर लग रहा है? नई बात लग रही है क्या? ब्रह्मा और ब्रह्मा के जो भी फॉलावर्स हैं, जिन्होंने ब्रह्मा को तो पहचाना; लेकिन बाप को नहीं पहचाना तो उनके लिए ये ज्ञान नहीं है। कौन-सा ज्ञान? जो बाप, बाप के रूप में आकर के पढ़ाते हैं। (बेहद की) माँ के रूप में तो ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान दिया गया। वह सारी सृष्टि के लिए है। उसमें संन्यासी भी हैं, गृहस्थी भी हैं, दूसरे धर्म की आत्माएँ भी हैं, दूसरे धर्मों में कनवर्ट होने वाली आत्माएँ भी हैं। माँ के द्वारा जो बच्चे पैदा होते हैं, उनकी सबकी गैरंटी होती है कि सब एक जैसे होते हैं? सब एक जैसे तो होते नहीं। कोई पढ़-लिखकर क्या बन जाते हैं। कोई बिना पढ़े-लिखे बड़े सेठ-साहूकार बन जाते हैं। कोई क्या बनते हैं, कोई क्या बनते हैं। तो सारी सृष्टि ब्रह्मा की औलाद तो है; लेकिन (मानधाता जैसे) बाप के बच्चे सिर्फ तुम बच्चे हो। अगले जन्म में जाकर के नारायण (जैसे) देवता बनेंगे या इसी जन्म में बनेंगे? इसी जन्म में बनें तब तो पढ़ाई सच्ची। डॉक्टरी की पढ़ाई यहाँ पढ़ें और कोई कहे डॉक्टर अगले जन्म में बनोगे। इंजीनियर की पढ़ाई यहाँ पढ़ें और कहो अगले जन्म में इंजीनियर बन जाओगे, तो कोई मूर्ख ही होगा (जो) पढ़ाई पढ़ेगा। भगवान आकर के प्रैक्टिकल बात बताते हैं। बच्चे! मैं यहाँ तुमको डायरैक्ट नर से नारायण, मनुष्य से देवता बनाता हूँ। ऐसे नहीं दुनियाँ का विनाश हो जाएगा, तो फिर नारायण ऊपर से टपक पड़ेंगे। इस बारे में ब्रह्माकुमार-कुमारियों के पास कोई ज्ञान है ही नहीं। ये ज्ञान तुम्हारे लिए है। बाप समझाते हैं तुम पवित्र थे। तुम संपूर्ण पवित्र बने थे। 16 कला सम्पूर्ण पवित्रता तुम्हारे पास थी। उनके पास नहीं थी। किनके पास? (सिर्फ) ब्रह्मा को जो फॉलो करने वाले हैं, जो ब्रह्मा को ही भगवान का साकार रूप मानने वाले हैं, उनके लिए ये (बेहद) पवित्रता की बात नहीं है। वे पूरी पवित्रता धारण नहीं करते। तुम पवित्र थे, अभी अपवित्र बन गए हो। क्यों? जब हम इतने ऊँचे बाप के बच्चे हैं, हम एवर

प्योर बाप के बच्चे बने, वे दूसरे धर्मों में कनवर्ट होने वाली आत्माएँ तो बनी नहीं, तो फिर ये बात कैसे, हम अपवित्र क्यों बन गए? द्वापर से दूसरे-2 धर्म स्थापन करने वाले जो इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट इस सृष्टि पर उतरे और उनके पीछे-2 उनके ढेर के ढेर फॉलोवर्स आए, उनका संग का रंग (शनैः शनैः) हमको लग गया, तो हम अपवित्र बन गए। कोई राजा का बच्चा हो और उसके साथ चार,छः,आठ,दस ऐसे भी बच्चे हैं, जो छोटे तबक्के के, छोटे परिवार के बच्चे हैं- प्रजा वर्ग में से, साहूकार वर्ग में से और राज्य अधिकारी वर्ग में से वे सब साथ-2 खेल रहे हैं, पढ़ रहे हैं और सबको कुसंग लग जाए, बुरा संग लग जाए, तो ज़्यादा कौन बिगड़ेगा? राजा का बच्चा ज़्यादा बिगड़ेगा या छोटे आदमियों के बच्चे ज़्यादा बिगड़ेंगे। (किसी ने कहा- बड़े आदमियों के) आप कौन-से, कैसे बाप के बच्चे हैं? (किसी ने कहा- बड़े बाप के बच्चे हैं) बड़े बाप के बच्चे हैं। वे इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट तो द्वापरयुग से आते हैं और हमारा बाप? सत्युग की आदि! उसको हमने पहचाना है। जो उस बाप को पहचानकर फिर भूल जाते हैं और दूसरों को अपना बाप बना लेते हैं, दूसरे देहधारियों की मत पर चल पड़ते हैं, वे बाप के बच्चे हैं ही नहीं। थे ही नहीं। तो ये बुद्धि अब तुमको मिलती है। तुम ऐसी पवित्र बुद्धि वाले बनते हो; क्योंकि तुम्हारे पूरे 84 जन्म हैं। कैसे तुम चक्र लगाते हो? ये चक्र लगाने की बुद्धि तुमको मिलती है कि हमने कैसे 84 का चक्र लगाया। बुद्धि में बैठता है कि इस-2 तरीके से हमारे 84 के चक्र हैं। दुनियाँ में तो ज़रा भी कोई इन बातों को नहीं जानते कि आत्मा की जानकारी क्या है और आत्माओं के बाप परमात्मा बाप की जानकारी क्या है, आत्माएँ कैसे-2 जन्म लेती हैं हमारी आत्मा 84 (का) चक्कर लगाएगी या नहीं लगाएगी, कम जन्म लेगी या पूरे 84 जन्म लेगी और कौन-कौन-से जन्म लेगी ये हमारी बुद्धि में बैठेगा, औरों की बुद्धि में नहीं बैठेगा। तो देखो ये ज्ञान बिल्कुल अलग है। भक्ति अलग है और ज्ञान अलग है। ज्ञान किससे आता है? ज्ञान आता है एक राम बाप से। जिसमें निराकार राम प्रवेश करता है बाप के रूप में। बाक़ी सबसे भक्ति आती है। जो ज्ञान बाप आकर के सुनाते हैं वो सौ परसेन्ट ज्यों का त्यों कोई सुना सकता है क्या? कुछ-न-कुछ मिक्स कर देगा। जैसे- दूध का एक घड़ा भरा हुआ रखा है और उसमें कोई एक बूँद साँप का विष डाल दे, तो सारा क्या हो जाएगा? सारा ही विष हो जाएगा। तो ऐसे ही भगवान का जो ज्ञान है वह भगवान ही आकर के अपने सच्चे स्वरूप में, मुकर्रर रूप में, मुकर्रर रथ के द्वारा जो ज्ञान देता है, वही सच्चा ज्ञान है। बाकी उसका सुना हुआ दूसरा कोई सुनाएगा तो उसमें कुछ-न-कुछ अपनी मनमत मिक्स करेगा। जो मनमत मिक्स होती है उससे दुनियाँ नीचे गिरती है। ऊँची उठ ही नहीं सकती। अभी भगवान बाप पढ़ाते हैं, भगवान से जो डायरैक्ट सुनते हैं, भगवान की परवरिश लेते हैं वह तो अव्यभिचारी ज्ञानी बनेंगे। अव्यभिचारी ज्ञान ऊँचा ले जाएगा और व्यभिचारी ज्ञान नीचे गिराएगा। हम दस आदमियों की बातें सुनें और दस आदमी (या धर्मपिताएं) हमारे गुरु बनें, तो एक रास्ता बताएँगे या दस रास्ते बताएँगे? (दसमुख रावण के) दस रास्ते हो जाएँगे। तो हमारी बुद्धि भ्रष्ट होगी ना। आज दुनियाँ में रावण का राज्य है। यथा राजा, तथा प्रजा। सब रावण सम्प्रदाय क्यों बन गए? रावण को दस सिर, तो दस मतें बताता है। (रामलीला की यादगार) एक सिर वाले राम का किसी को ज्ञान ही नहीं है, तो एक मत पकड़ेगा कैसे। रामलीला करते हैं तो राम को एक सिर दिखाते हैं और रावण को दस सिर दिखाते हैं। क्यों दिखाते हैं? भगवान राम कौन है ये आज दुनियाँ में किसी को पता ही नहीं है। भगवान राम

खुद आकर के अपना परिचय देता है, तब सब बच्चों को परिचय होता है, वो भी नंबरवार। जिनको पूरा परिचय बुद्धि में बैठता है वो 84 जन्म लेने वाले बनते हैं। जिनको कम परिचय बुद्धि में बैठता है वो कम जन्म लेने वाले बनते हैं। जितने जन्म कम, उतना दुख ज़्यादा और सुख कम होता जावेगा है।

ओम् शांति!

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025